

## बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग: छोटे किसानों के लिए एक आशीर्वाद

डॉ. साक्षी एवं डॉ. प्रियंका कुमारी शर्मा

औषधि विभाग, परजीवी-विज्ञान विभाग

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान इज्जतनगर बरेली

बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग घरेलू खपत और आय उत्पादन के लिए मुर्गी, बतख, गीज़ और टर्की जैसे छोटे पैमाने पर पोल्ट्री का उत्पादन है। यह विकासशील देशों के ग्रामीण क्षेत्रों में एक आम प्रथा है, जहां यह गरीबी उन्मूलन और पोषण सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह ग्रामीण परिवारों के लिए आय का एक मूल्यवान स्रोत प्रदान कर सकते हैं। अंडे और मांस जैसे पोल्ट्री उत्पादों को स्थानीय रूप से या बाजारों में बेचा जा सकता है। इससे सम्बंधित अंडा एवं मांस उत्पाद प्रोटीन, विटामिन और खनिजों का एक अच्छा स्रोत हैं। पोल्ट्री उत्पादों की नियमित खपत घरेलू पोषण में सुधार लाने और कुपोषण को कम करने में मदद कर सकती है। बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग को एक व्यावसायिक उपक्रम मानकर महिलाओं और युवाओं को सशक्त बनाने और सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देने में मदद किया जा सकता है। ये उपक्रम कई तरीकों से गरीबी को दूर करने में मदद कर सकती है। पहला, यह ग्रामीण परिवारों को आय का स्रोत प्रदान कर सकता है। दूसरा, यह घरेलू पोषण में सुधार और कुपोषण को कम करने में मदद कर सकता है, जिससे उत्पादकता और आर्थिक विकास में वृद्धि हो सकती है। तीसरा, यह महिलाओं और युवाओं को सशक्त कर सकता है।

बैकयार्ड मुर्गी पालन कृषि का अपेक्षाकृत स्थायी रूप है। उदाहरण के लिए, मुर्गियां भोजन को मांस और अंडे में परिवर्तित करने में सक्षम हैं। उन्हें विभिन्न प्रकार के आहारों पर भी पाला जा सकता है, जिनमें घरेलू खुरच और कीट शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, बैकयार्ड पोल्ट्री खाद का उपयोग मिट्टी की उर्वरता और फसल पैदावार में सुधार के लिए उर्वरक के रूप में किया जा सकता है। बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग कृषि के पर्यावरण प्रभाव को कम करने में भी मदद कर सकती है। उदाहरण के लिए, मुर्गियाँ पीड़कों और कीटों को नियंत्रित करने में मदद कर सकती हैं, जो कीटनाशकों की आवश्यकता को कम कर सकते हैं। इसके अलावा, बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग मिट्टी के स्वास्थ्य और पानी की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद कर सकती है।

### बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग के लिए चुनौतियां और अवसर

बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग के लिए कई चुनौतियां और अवसर हैं। कुछ चुनौतियां इस प्रकार हैं:

**बीमारी के प्रकोप:** बैकयार्ड पोल्ट्री विभिन्न प्रकार के रोगों के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं, जो किसानों के लिए महत्वपूर्ण नुकसान का कारण बन सकते हैं।

**प्रीडेशन:** जंगली जानवरों, जैसे लोमड़ी और कुत्ते द्वारा बैकयार्ड मुर्गी पालन को नुकसान पहुँच सकता है।

**बाजारों तक पहुंच की कमी:** कुछ क्षेत्रों में, बैकयार्ड पोल्ट्री किसानों को अपने उत्पादों को बेचने के लिए बाजारों तक पहुंचने में कठिनाई हो सकती है।

इन चुनौतियों के बावजूद, बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग के लिए कई अवसर हैं। विकासशील देशों में कुक्कुट उत्पादों की बढ़ती मांग से बैकयार्ड पोल्ट्री किसानों के लिए नए बाजार बन रहे हैं। इसके अतिरिक्त, सतत और नैतिक खाद्य उत्पादन में बढ़ती रुचि है, जो बैकयार्ड पोल्ट्री उत्पादों की मांग पैदा कर रहा है।

### **बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग की शुरुवात**

भारत में सबसे आम बैकयार्ड पोल्ट्री नस्लें हैं:

**कड़कनाथ (kadaknath):** भारत की एक देशी नस्ल है जो अपने काले मांस और अंडे के लिए जानी जाती है। यह प्रोटीन और आयरन का अच्छा स्रोत है।

**असील:** असील मुर्गे अपने बड़े आकार, मांसपेशियों के निर्माण और आक्रामक स्वभाव के लिए जाने जाते हैं।

**ब्रह्मा:** ब्रह्मा मुर्गे भी एक बड़ी नस्ल हैं और अपने सौम्य स्वभाव और सुन्दर पंखों के लिए जाने जाते हैं। ये भूरे अंडे वाली मुर्गी होती है।

**कोचीन:** कोचीन मुर्गियां एक मध्यम आकार की नस्ल है जिसमें झबरे पंख होते हैं। वे अपने सौम्य स्वभाव और अच्छे अंडे के उत्पादन के लिए जाने जाते हैं।

आपके लिए बैकयार्ड पोल्ट्री की सबसे अच्छी नस्ल आपकी विशिष्ट जरूरतों और प्राथमिकताओं पर निर्भर करेगी। यदि आप अंडे के लिए एक अच्छी नस्ल की तलाश कर रहे हैं, तो आप एक विशेष नस्ल पर विचार कर सकते हैं जैसे सफेद लेघोर्न या रोड आइलैंड रेड। यदि आप एक नस्ल की तलाश कर रहे हैं जो मांस उत्पादन के लिए अच्छी है, तो आप एक नस्ल जैसे कॉर्निश क्रॉस पर विचार कर सकते हैं। यदि आप एक ताप रोधी नस्ल की तलाश कर रहे हैं, तो आप राजस्थान चिकन जैसी नस्ल पर विचार कर सकते हैं।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि इनमें से कुछ नस्लें, जैसे असील और कड़कनाथ दुर्लभ कम उपलब्धता वाली नस्ल मानी जाती हैं।

### **बैकयार्ड पोल्ट्री का आवास और प्रबंधन**

**हवादार:** स्वस्थ रहने के लिए मुर्गियों को ताजा हवा की जरूरत होती है। मुर्गी दड़बा के पास ऐसी खिड़कियां होनी चाहिए जो हवा के प्रवाह के लिए खोल सकें।

**शुष्क:** कुक्कुट नम परिस्थितियों में रोगों और परजीवी के प्रति अतिसंवेदनशील होते हैं। कूप का निर्माण अच्छी तरह से तैयार क्षेत्र में होना चाहिए और उसमें सूखी जमीन होनी चाहिए।

**सुरक्षित:** मुर्गियों को शिकारियों से सुरक्षित रखने की आवश्यकता है। मुर्गी दड़बा की एक मजबूत छत और किनारे होनी चाहिए, और रात में बंद होना चाहिए।

**पर्याप्त जगह:** मुर्गी दड़बा का आकार पक्षियों की संख्या पर निर्भर करेगा। अंगूठे का एक अच्छा नियम है कि प्रति पक्षी 2-3 वर्ग फुट की जगह प्रदान करना है।

**सफाई:** खाद और बिस्तर को हटाने के लिए मुर्गी दड़बा को नियमित रूप से साफ किया जाना चाहिए। इससे बीमारियों और परजीवियों को रोका जा सकेगा।

### बैकयार्ड पोल्ट्री का पोषण प्रबंधन

बैकयार्ड पोल्ट्री को संतुलित आहार की आवश्यकता होती है जिसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन और खनिज शामिल होते हैं। यहाँ पर कई तरह के कॉमर्शियल पोल्ट्री फीड उपलब्ध हैं, या आप अपना खुद का फीड बना सकते हैं। यदि आप कोई व्यावसायिक पोल्ट्री चारा चुन रहे हैं, तो निश्चित रूप से उस पक्षी का चयन करें जो आपकी उम्र और प्रकार के पक्षी के लिए उपयुक्त है। उदाहरण के लिए, शिशु चूजों को वयस्क मुर्गियों की तुलना में अलग चारे की आवश्यकता होती है। यदि आप अपना भोजन बना रहे हैं, तो निश्चित रूप से विभिन्न अवयवों को शामिल करें ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आपके पक्षियों को वे सभी पोषक तत्व मिल रहे हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता है। एक घरेलू पोल्ट्री फीड में शामिल करने के लिए कुछ अच्छी सामग्री में शामिल हैं:

1. अनाज, जैसे मक्का, गेहूं और ओट्स
2. प्रोटीन स्रोतों जैसे सोयाबीन, मांस स्क्रेप और मछली भोजन
3. कैल्शियम स्रोत जैसे ओइस्टर शेल या चूना पत्थर
4. विटामिन और खनिज
5. इसके अलावा आप अपने पोल्ट्री फीड में अन्य सामग्री जैसे फल, सब्जियां और दही भी डाल सकते हैं। फिर भी, अपने पक्षियों को कोई भी ऐसा भोजन खाने से दूर रहिए जो उनके लिए विषैला हो, जैसे कि प्याज़, लहसुन, और चॉकलेट।

### याद रखने हेतु मुख्य बातें

**आहार:** मुर्गी को संतुलित आहार की आवश्यकता होती है जिसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन और खनिज शामिल होते हैं। यहाँ पर कई तरह के कॉमर्शियल पोल्ट्री फीड उपलब्ध हैं, या आप अपना खुद का फीड बना सकते हैं।

**पानी:** मुर्गी पालन को हर समय ताजा और साफ पानी की आवश्यकता होती है। यह निश्चित करने के लिए कि यह स्वच्छ और पूर्ण है, पानी की नियमित जाँच करें। अपने पक्षियों को ताजा भोजन और पानी उपलब्ध कराएं। मुर्गीपालन को हर समय ताजा, स्वच्छ भोजन और पानी की आवश्यकता होती है। भोजन और पानी के व्यंजनों को नियमित रूप से जांचने के लिए सुनिश्चित करें कि वे पूर्ण और स्वच्छ हों।

**अपने पक्षियों को नियमित रूप से खिलाएं:** मुर्गियों को दिन में कम से कम एक बार खिलाया जाना चाहिए, लेकिन दिन में दो बार बेहतर होता है।

**ठंडे, शुष्क स्थान में मुर्गी दाना रखें:** इसे खराब होने से रोकने के लिए एक ठंडे , शुष्क स्थान में भोजन रखें।

### बैकयार्ड पोल्ट्री का स्वास्थ्य प्रबंधन

**नए पक्षियों को क्वारंटीन करें:** अपने झुंड में नए पक्षियों को पेश करने से पहले, उन्हें कम से कम दो सप्ताह के लिए क्वारंटीन करें। इससे बीमारियों को फैलने से रोका जा सकेगा। बीमारी या चोट के निशान के लिए नियमित रूप से अपने पक्षियों का निरीक्षण करना भी महत्वपूर्ण है। यदि आप किसी भी समस्या को देखते हैं, तो निश्चित रूप से एक पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

**अपने पक्षियों को टीके लगाइए:** ऐसी बहुत सी बीमारियों का टीका लगाया जा सकता है। अपने पशु चिकित्सक से बात करें कि आपके पक्षियों के लिए कौन सा टीका सही है।

**अपने मुर्गी दड़बाको साफ रखें:** खाद और बिस्तर को हटाने के लिए मुर्गी दड़बाको नियमित रूप से साफ करें। इससे बीमारियों और परजीवियों को रोका जा सकेगा।

यहाँ कुछ सामान्य रोग हैं जो बैकयार्ड मुर्गी पालन अनुबंध कर सकते हैं:

- 1. कॉकिडोसिस (coccidiosis):** एक परजीवी रोग है जो डायरिया, वजन कम करने और मुर्गीपालन में मृत्यु का कारण बन सकता है।
- 2. मुर्गी हैजा:** मुर्गी हैजा एक जीवाणु रोग है जो मुर्गीपालन में अचानक मृत्यु का कारण बन सकता है।
- 3. मरेक रोग:** मरेक रोग एक वायरल रोग है जो कुक्कुट में ट्यूमर और पक्षाघात का कारण बन सकता है।
- 4. न्यूकैसल रोग:** न्यूकैसल रोग एक वायरल रोग है जो श्वसन संबंधी लक्षणों, तंत्रिका संबंधी समस्याओं और मुर्गीपालन में मृत्यु का कारण बन सकता है।
- 5. साल्मोनेलोसिस (salmonellosis):** एक जीवाणु रोग है जो अतिसार , बुखार, और कुक्कुट और मनुष्यों में उल्टी का कारण बन सकता है।

यदि आप अपने पक्षियों में किसी भी प्रकार की बीमारी के संकेत देखते हैं , तो तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।